शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 03-2020, वर्ग - BA III

प्रश्न :- प्रथम महायुद्ध के पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका में कृषि विकास का संक्षिप्त विवेचना कीजिए। उस समय से कृषि के प्रति राज्य की नीति क्या रही है?

Ans ⇒ प्रथम महायुद्ध काल में कृषि-वस्तुओं की विदेशी मांग बढ़ जाने से अमेरिकी कृषि को अत्यधिक प्रोत्साहन हुआ है। कपास का निर्यात 1916 में 50 लाख गांठ से बढ़कर 1919 में 65 लाख गांठ हो गया। युद्ध काल में अमेरिका से खाद्यान्नों के निर्यात में 400 % और तम्बाकू के निर्यात में 100 % की वृद्धि हुई। कृषि क्षेत्र में विस्तार और कृषि फलों में वृद्धि से अमेरिकी किसानों को अधिक लाभ हुआ। उनकी निवल आय 1914 में 45 मिलियन डॉलर से बढ़कर 1919 में

से 19 मिलियन डॉलर हो गया।

प्रथम महायुद्ध के बाद अमेरिकी

कृषि ⇒ प्रथम महायुद्ध के बाद विदेशी मांग घट जाने से तथा कृषि मूल्यों में अत्यधिक कमी के कारण अमेरिकी किसानों की कठिनाईयाँ बढ़ गयी। 1921 में कृषि प्रधान राज्यों के प्रतिनिधियों ने 'फार्म ब्लॉक' की स्थापना की तथा किसानों को राहत दिलाने के लिए संघ सरकार पर दबाव डाला गया। किसानों के राहत पहुँचाने के उद्देश्य से संघ सरकार ने अनेक उपाय किए।

सर्वप्रथम किसानों को सहकारी आधार पर संगठित करने तथा कृषि-साख की व्यवस्था का प्रयास किया गया। संघीय प्रबंध-स्तर बैंकों के कार्यकलापों के विस्तार हेतु 1923 में 'कृषि-साख अधिनियम' पारित किया गया। इससे, 1929 से

पारित 'कृषि विपणन अधिनियम' के अन्तर्ग
50 करोड़ डॉलर की पूँजी से 'संघीय प्रक्षेत्र मण्डल
की स्थापना की गई। तीसरे, 1921 में 'युद्ध-वित्त
निगम' को कृषि-पदार्थों के निर्यात हेतु वित्तीय
सहायता प्रदान करने का अधिकार दिया
गया। चौथे: कृषि मूल्य बढ़ाने तथा 1921, 1922
एवं 1930 के प्रमुख अधिनियमों द्वारा कृषि-
वस्तुओं को विदेशी प्रतियोगिता से बचाने का
प्रयास किया गया। मन्दी की स्थिति प्रबल
बनी रही। कृषि भूमि का मूल्य गिरकर एक-
चौथाई रह गया।

1931 और 1932 में, जब मंदी की
दशा चरम सीमा पर थी, तो अमेरिका में खेतान
का उत्पादन युद्धकालीन उत्पादन से भी अधिक
हो गया। फलतः कृषि मूल्यों में भारी गिरावट
आई। चूँकि अमेरिका की लगभग आधी
जनसंख्या की क्रयशक्ति प्रत्यक्ष या कृषि मूल्यों
पर आधारित थी, इसलिए कृषि तथा उससे
आमदनी की स्थिति में सुधार आवश्यक हो

गया। राष्ट्रपति रूजवेल्ट की 'न्यू डील पॉलिसी' के अन्तर्गत कृषि की दशा सुधारने के लिए अग्र उपाय किए गए ⇒

(1) कृषि समायोजन अधिनियम - 1933 में 'कृषि समायोजन अधिनियम' पारित हुआ, जिसका उद्देश्य किसानों की क्रयशक्ति बढ़ाना था। उद्देश्य की पूर्ति के लिए तीन तरीके अपनाए गए -

(i) कृषि उत्पादन पर नियंत्रण।

(ii) कृषि-लाभ का प्रसार।

(iii) मुद्रा का अवमूल्यन।

अत्युत्पादन को अवसाद का मूल कारण मानते हुए कृषि उत्पादन घटाने के लिए सभी प्रमुख फसलों के बुआई का क्षेत्र घटाया गया। इससे बदले किसानों को आर्थिक सहायता दी गई।